आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received:09/08/2022; Published:24/09/2022

कविताएं

आजादी का अमृत वर्ष

- मुक्ता

हर दिये की झिलमिल में झलकती है रोशनी देश की
दिये को रोशन करने वाले हाथों में जज्बा है प्रेम का
नदी में झलकता है प्रतिबिम्ब दीये का
नदी में जैसे नक्शा समाया हो देश का
पर्वतों पर फहराता तिरंगा
देश की आन को पहुंचाएगा शिखर पर
आजादी के अमृत महोत्सव का जोश है देश में
सुबह उगते सूरज की रोशनी है चुनौती
हर व्यक्ति को निभानी है अपने हिस्से की भूमिका
यह देश हमारा है और हम हैं देश से
बना रहे यूँ ही भाईचारा देश में
आजादी के सूरज को आसान नहीं बाँधना मुठ्ठी में
वक्त आने पर रक्त से दाय निभाना है देश का।

****